स्थान- खेड़ी तालाब
इन्टरव्यू २० कैसेट नंबर ३ का पहला इन्टरव्यू

प्र: आपका नाम क्या है ?
ज: मेरा नाम अब्दुल रहीम है।

प्र: आपकी उम्र कितनी है ?
ज: मेरी उम्र 18 वर्ष है।

प्र: कितने कितने साल से ये काम कर रहे हैं ?

ज: साल भर से, ज्यादा दिन नहीं हुआ, हम तो हाईस्कूल तक पढ़े हैं, उसके बाद से काम करने लगे, घर को काम है इसीलिए करते हैं।

प्र: ये क्या काम हैं, क्या कहते हैं इसे ?
ज: ये तानी है, इसका पहले, रेशम आता है से गड्डा-गड्डा आता है इसलिए फिर अन्टा जराता है ऊपर मशीन में, भराने के बाद सीधे लगाकर खोलते हैं।

प्र: उसके बाद क्या इसकी रंगाई वगैरह होती है ?
ज: जो खरीदेगा इसको तो अपना-अपना कलर रंगेगा, रंगने में बाद फिर बीनेगा अपना डिजाइन बनायेगा।

प्र: ये किस हिसाब से मिलता है, एक लच्छी ?
ज: ये किलो के हिसाब से मिलती है, इसका रेट हर वक्त अलग-अलग होता है, कम और ज्यादा होता रहता है, इस समय 1100 रुपया किलो है ये लच्छी।

प्र: आपको खरीदने और बेचने में कितना मूनाफा होता है ?
ज: 100 रुपया का, एक किलो में।

प्र: इसी फार्म में आप लोग इसे खरीदते हैं ?
ज: नहीं कड़छी रहती है, बड़ी-बड़ी लड़ी रहती है, गड्डा में आता है, बासठ किलो का गड्डा दे दो उसमें 5-5 किलों का गड्डा अलग-अलग रहता है, फिर उसके अन्दर 200-200 ग्राम का अलग-अलग रहता है। खोलने के बाद उसे इस पर (मशीन पर) चढ़ाया जाता है, नटावा उस पर रहता है चढ़ाने के बाद फिर अन्टा भराता है, अंटा भराने के बाद, तैयार हो जाता है, तानी फिर जो उसको लेगा, जो कलर में रंगेगा वही कलर रंगायेगा।

प्र: आपका काम केवल रेशम खरीद कर लच्छी बना कर बेचना है ?
ज: जी हां, फिर जो खरीदेगा, वो अपनी साड़ी बुनेगा इन पर।

प्र:आप के घर में शुरू से ये काम होता रहा है या शुरू में बुनकारी की ?
ज: पहले बुनकारी की, साड़ी रंगते थे, अब भी साड़ी बाड़ी रंगाई कर देते हैं।

प्र: बुनकारी नहीं होती थी ?
ज: होती थी आठ बरस पहले।

प्र: तो बुनकारी क्यों छोड़ दी ?
ज: अब इसी तरह छोड़ दिया। अब्बू करते रहे, हम लोग तो नही करते थे, हम लोग पढ़ते थे। अब्बू पढ़े लिखे थे नहीं, सब काम धंधा बिगड़ गया।

प्र: क्यों बिगड़ गया ?
ज: इसी तरह था, बस बिगड़ गया, बिजनेस करने का एक तरीका होता है, नहीं कर पाये।

प्र: तो बुनाई का ही काम करते थे ?

ज: नहीं वो बुनते नहीं थे, बिनवाते थे।

प्र: कितना करघा था आपके पास ?
ज: उस वक्त तो बहुत था, करीब 30-40 रहा होगा।

प्र: अब क्या सारे करघे बिक गये ?
ज: नहीं बिके नहीं, बन्द कर दिये, अब ये काम करते हैं, अब तो काम हम लोग नहीं करते। हमारे चचा लोग करते हैं बड़े अब्बा चचा लोग करते है, हम लोग बन्द कर दिये।

प्र: आपके इस काम का नाम क्या हैं ?
ज: तानी करने वाने को तनारा कहते हैं, तानी बेचने वाले को तानी बेचने वाला कहते हैं।

प्र: आपके पास यही एक करखा हे या और भी है ?
ज: उसके अलावा एक और है, उस पर मेरे बड़े भाई काम करते हैं।

प्र: इस काम से आपको एक महीने में कितना मुनाफा हो जाता है ?
ज: 5000 रुपया पड़ता है।

प्र: फिर तो आरात से चल जाता होगा ?
ज: हां आराम से हम लोग रहते है परेशानी नहीं।

प्र: भाई बहन कितने हैं ?
ज: दो भाई दो बहन हैं, एक की शादी हो गयी, दो भाई बचे हैं, और एक बहन बची है।

प्र: आपकी तरह आपके भाई बहन भी पढ़े हैं ?
ज: हां सब पढ़े हैं एक बहन इण्टर पास है। जिसकी शादी हो गई वह हाई स्कूल पास है।

प्र: आप लोग अब इसी काम में लगे रहना चाहते हैं या दूसरे काम में लगना चाहते हैं ?
ज: अगर पैसा होगा, जो साड़ी का काम चालू करेंगे, गद्दी वाला।

प्र: कब तक आपका वो काम शुरू हो जायेगा ?
ज: जब तक पैसा नहीं आयेगा तब तक तो यही करेंगे।

प्र: तो काम शुरू करने में कितना पैसा लगता है ?
ज: बहुत पैसा लगता है, कुछ नहीं तो तब भी 3-4 लाख रुपया लगेगा। हां हो जायेगा। हम लोग का हो जायेगा, तीन साल में शुरू कर देंगे हम लोग ये बन्द कर देंगे।

प्र: आपको नहीं लगता कि ये बुनकारी वाली धंधा धीरे-धीरे मन्दा होता जा रहा है ?
ज: हां कम तो होता जा रहा है, पावर लूम की वजह से। पावर लूम पर न जो साही तैयार होती है 15 दिन में तो 1 दिन में हो जाती है। एक में दो-तीन साड़ी तैयार हो जाती है।

प्रः पावरलूम ही मुख्य कारण है, या इसके अलावा भी कोई कारण है ?
जः और क्या कारण हो सकता है, पावरलूम ही है कारण। ऐसा है, बनारसी का धंधा चलता रहेगा हमेशा कभी बन्द नहीं हो सकता है।

प्रः आपके काम की जरूरत तो पावरलूम में भी पड़ती होगी ?
जः हां हम लोगों को कोई फरक नहीं पड़ता। इसकी जरूरत तो रहेगी बुनकरों की बात कर रहे थें।